Aashiqe Meelad Badshah (Hindi)

आ़शिक़े मीलाद बादशाह

- अ़क़्लों को हैरान कर देने वाला वाक़िआ़ 01
- मीलादे मुस्त़फ़ा का बा क़ाइदा आग़ाज़ करने वाला बादशाह 08
- शैत़ानी लोग 11

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इ़लिमय्या (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**आ़शिक़े मीलाद बादशाह**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

आ़शिक़े मीलाद बादशाह

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 22 सफ़्हात का रिसाला **''आ़शिक़े मीलाद बादशाह''** पढ़ या सुन ले उस को और उस की आल को 12वीं वाले आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जश्ने विलादत के सदक़े बे ह़िसाब बख़्श दे। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नमाज़ के बा'द ह़म्दो सना व दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले से फ़रमाया : ''दुआ मांग क़बूल की जाएगी, सुवाल कर, दिया जाएगा।'' (نسائی، ص ۲۲۰ حدیث ۱۲۸۱)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

अ़क़्लों को ह़ैरान कर देने वाला वाक़िआ़

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा इब्ने ह़जर मक्की शाफ़ेई़ رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه **ने 'मतुल कुब्रा** सफ़्हा 52 पर विलादते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर होने वाला एक ईमान अफ़रोज़ और अ़क़्लों को ह़ैरान कर देने वाला वाक़िआ़ तह़रीर फ़रमाते हैं कि एक शख़्स जिस का नाम **''आ़मिर यमनी''** था उस की एक बेटी थी जो कूलन्ज (या'नी बड़ी आंत का दर्द) जुज़ाम (या'नी सफ़ेद दाग़) वग़ैरा के अमराज़ में मुब्तला होने के साथ साथ चलने फिरने से मा'ज़ूर भी थी, आ़मिर के पास एक बुत था वोह अपनी बेटी को उस के सामने बिठाता और बुत से कहता : ''अगर तू शिफ़ा दे सकता है तो

मेरी बेटी को शिफ़ा दे।'' सालों तक वोह यूं कहता रहा मगर बुत, बुत बना रहता, पथ्थर का बुत दे भी क्या सकता है! तौफ़ीक़ो इनायत की हवा चली कि एक दिन आ़मिर अपनी बीवी से कहने लगा कि हम कब तक इस गूंगे बहरे पथ्थर को पूजते रहेंगे, जो न बोलता है न सुनता है, मैं नहीं समझता कि हम ''सह़ीह़ दीन'' पर हैं। उस की बीवी ने कहा : ठीक है, फिर हमें साथ ले कर हिदायत की तलाश के लिये निकलो शायद कि हमें ह़क़ की त़रफ़ कोई राहनुमाई मिल जाए। दोनों मियां बीवी अपने मकान की छत पर बैठे येही गुफ़्तगू कर रहे थे कि अचानक उन्हों ने देखा कि एक नूर है जो सारे आस्मान पर फैला हुवा है और उस की रोशनी से सारी दुन्या चमक उठी है! **अल्लाह** पाक ने उन की आंखों से जुल्मत (या'नी अंधेरे) के पर्दे हटा दिये ताकि वोह ख़्वाबे ग़फ़्लत से जाग जाएं, क्या देखते हैं कि फ़िरिश्ते सफ़ बांधे एक मकान को घेरे में लिये हुए हैं, पहाड़ सज्दा कर रहे हैं, ज़मीन पुर सुकून है और दरख़्त झुके हुए हैं और एक कहने वाला कह रहा है : **''मुबारक हो ! सच्चे और आख़िरी नबी** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **पैदा हो गए हैं।''**

मुबारक हो कि ख़त्मुल मुरसलीं तशरीफ़ ले आए
जनाबे रह़मतुल्लिल आ़लमीं तशरीफ़ ले आए

आ़मिर ने अपने बुत को देखा तो वोह औंधे मुंह ज़मीन पर ज़लीलो ख़्वार पड़ा था! आ़मिर की बीवी कहने लगी : ज़रा इस बुत को तो देखिये! कैसे सर नीचा किये ज़मीन पर पड़ा है! इतना सुनते ही बुत बोल उठा : ''**ख़बरदार हो !** बड़ी ख़बर ज़ाहिर हो गई है, वोह पाक ज़ात पैदा हो चुकी है जो काएनात को शरफ़ो इफ़्तिख़ार बख़्शेगी, आगाह रहो! वोह आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिन की आमद (या'नी आने का) का हर एक को इन्तिज़ार था, जिन से शजरो ह़जर (या'नी दरख़्त और पथ्थर) बातें करेंगे, वोह कि जिन के इशारे से चांद दो टुकड़े होगा और जो

क़बीलए रबीआ़ व मुज़र के सरदार होंगे ज़ाहिर हो चुके हैं।'' येह सुन कर आ़मिर ने बीवी से कहा : तू सुन रही है कि येह पथ्थर क्या कह रहा है ! बोली इस से पूछिये : उस पैदा होने वाले सआ़दत मन्द का नाम क्या है जिन के नूर से **अल्लाह** पाक ने सारे जहान को रोशन फ़रमा दिया है ? आ़मिर ने कहा : ऐ ग़ैब से आने वाली आवाज़ ! इस पथ्थर ने सिर्फ़ आज ही बात की है येह तो बताओ उस का नाम क्या है ? जवाब दिया : **उन का नामे नामी इस्मे गिरामी मुह़म्मद** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **है जो साह़िबे ज़मज़म व सफ़ा (या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल** (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) **के बेटे हैं, उन की ज़मीन ''तहामा'' है और उन के दोनों कन्धों के दरमियान ''मोहरे नुबुव्वत'' है वोह जब चलेंगे तो बादल उन पर साया करेगा।** (नहीं नहीं बल्कि बादल उन से साया ह़ासिल करेगा)

इतने में आ़मिर की बीमार बेटी जो कि नीचे बे ख़बर सो रही थी अपने पाउं पर चलती हुई छत पर आ गई, आ़मिर ने ह़ैरान होते हुए कहा : ऐ मेरी बेटी ! तेरी वोह तक्लीफ़ कहां गई जिस में तू मुब्तला थी और जिस ने तेरा जीना मुश्किल कर रखा था ? बेटी ने जवाब दिया : अब्बाजान ! मैं दुन्या जहान से बे ख़बर सो रही थी कि मैं ने अपने सामने नूर की तजल्ली देखी, मेरे सामने एक बुज़ुर्ग तशरीफ़ लाए, मैं ने पूछा : येह नूर कैसा है जो मैं देख रही हूं और येह कौन बुज़ुर्ग हैं, जिन के मुबारक दांतों के नूर ने मुझ पर साया किया हुवा है ? जवाब आया : येह अ़दनान के बेटे का नूर है (ह़ज़रते अ़दनान रसूले पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बाप दादों में से एक बुज़ुर्ग हैं) जिस से काएनात पुरनूर हो रही है, उन का नामे नामी इस्मे गिरामी **अह़मद** व **मुह़म्मद** है, फ़रमां बरदारों पर रह़म और ख़ता़कारों से दर गुज़र फ़रमाएंगे। मैं ने पूछा : उन का दीन क्या है ? जवाब दिया : वोह ''दीने ह़नीफ़'' (या'नी सच्चे दीन) पर हैं। मैं ने पूछा : वोह किस की

इ़बादत करते हैं ? जवाब मिला : **अल्लाह** وَحْدَهٗ لَاشَرِيْك की या'नी उस **अल्लाह** पाक की जो अकेला है और उस का कोई शरीक नहीं। मैं ने पूछा : आप कौन हैं ? तो जवाब मिला : मैं उन फ़िरिश्तों में से एक फ़िरिश्ता हूं जिसे नूरे मुह़म्मदी के उठाने का शरफ़ बख़्शा गया है। मैं ने अ़र्ज़ की : क्या आप मेरी इस तक्लीफ़ को नहीं देखते ? फ़िरिश्ते ने कहा : हां ! तुम नबिय्ये अह़मद صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वसीले से दुआ़ करो। **अल्लाह** पाक ने फ़रमाया है मैं ने मह़बूब की ज़ात में अपना राज़ व दलील रखी है, जो कोई मुझ से मेरे मह़बूब के वसीले से दुआ़ करेगा मैं उस की मुश्किल को ह़ल कर दूंगा।[1] और जिन्हों ने मेरी ना फ़रमानी की है मैं उन के बारे में क़ियामत के दिन अपने ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को शफ़ीअ़ (या'नी सिफ़ारिश करने वाला) बनाऊंगा। वोह बच्ची कह रही है कि येह सुनते ही मैं ने अपने दोनों हाथ फैला दिये और सच्चे दिल से **अल्लाह** पाक से दुआ़ की और फिर अपने हाथों को चेहरे और जिस्म पर फेरा, जब नींद से उठी तो ऐसी थी जैसे अब आप मुझे देख रहे हैं।

येह सुन कर आ़मिर यमनी ने अपनी बीवी से कहा : बेशक हम ने इस (मुबारक हस्ती) की अ़जीबो ग़रीब निशानियां देखी हैं, मैं उन की मह़ब्बत और दीदार के शौक़ में जंगलों और दुश्वार गुज़ार वादियों को त़ै करूंगा। चुनान्चे आ़मिर यमनी और उस के तमाम घर वाले नूर वाले आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तलाश में उठ खड़े हुए और मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا के सफ़र का इरादा किया, सर ज़मीने मक्का में दाख़िल

---

1 ..... हम भी दुआ़ करते हैं : **या अल्लाह !** हमारा ईमान सलामत रखना, मौलाए करीम ! बुरे ख़ातिमे से बचाना, **या अल्लाह !** गुनाहों की बीमारियों से शिफ़ा दे दे, **या अल्लाह !** ज़ाहिरी बात़िनी अमराज़ से शिफ़ा अ़त़ा फ़रमा, परवर्दगार ! नूरे अह़मदी का सदक़ा हमेशा हमेशा के लिये हम से राज़ी हो जा, ऐ परवर्दगार ! जश्ने विलादत का वासित़ा हमें जन्नतुल फ़िरदौस में अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस अ़त़ा कर दे, **या अल्लाह !** सारी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

हो कर बीबी आमिना رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا के मकाने आ़लीशान का पता पूछ कर दरवाज़े पर दस्तक दी । बीबी आमिना ख़ातून رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا ने आने का मक़्सद पूछा : तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : हमें अपने लख़्ते जिगर, नूरे नज़र का नूर बरसाने वाला चेहरा दिखा दीजिये जिस ने अपनी चमक दमक से सारी दुन्या को चमका दिया है जिन के तुफ़ैल **अल्लाह** करीम ने काएनात को रोशन फ़रमा दिया है । ह़ज़रते बीबी आमिना رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا ने फ़रमाया : मैं अभी अपना नूरे नज़र (या'नी अपना प्यारा प्यारा बेटा) तुम्हें नहीं दिखाऊंगी क्यूं कि मुझे यहूदियों का डर है कहीं वोह इन को नुक़्सान न पहुंचाएं और मैं नहीं जानती कि तुम कौन लोग हो और कहां से आए हो ? आ़मिर और उस के घर वालों ने कहा : हम ने इसी आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत में अपने वत़न और अपने दीन (या'नी अपने बात़िल मज़हब) को छोड़ा है कि इस नूर वाली सरकार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दीदार से अपनी आंखों को रोशन करें जिन के दरबार में ह़ाज़िर होने वाला कभी नाकामो ना मुराद नहीं लौटेगा । येह सुन कर बीबी आमिना رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا ने फ़रमाया : अच्छा अगर मेरे प्यारे बेटे के दीदार के बिग़ैर तुम्हारा गुज़ारा नहीं तो जल्दी न करो कुछ देर ठहरो । येह फ़रमा कर आप अपने मकाने अ़र्श निशान में तशरीफ़ ले गईं, थोड़ी ही देर में इर्शाद फ़रमाया : अन्दर आ जाओ । इजाज़त मिलते ही वोह उस मुबारक कमरे में दाख़िल हुए जिस में दो जहां के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आराम फ़रमा थे, वहां के अन्वारो तजल्लियात में ऐसे गुम हुए कि दुन्या और दुन्या में जो कुछ है इस से बे ख़बर हो गए, बे साख़्ता **अल्लाह** पाक का ज़िक्र करने लगे, जैसे ही चेह्रए पुर अन्वार से पर्दा उठा तो दीदार करते ही यक दम उन की चीख़ें निकल गईं, इतना रोए कि हिचकियां बंध गईं, क़रीब था कि उन की रूह़ उन के जिस्म से निकल जाती । आगे बढ़ कर रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नन्हे नन्हे मुबारक हाथों को चूमा । ह़ज़रते बीबी

आमिना رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا ने इर्शाद फ़रमाया : अब जल्दी से चले जाइये, आख़िर कार न चाहते हुए आ़मिर यमनी दिल पर हाथ रखते हुए घर से बाहर आए। आ़मिर यमनी का ह़ाल ही बदल चुका था, वोह उस नूरानी चेहरे के दीदार के आ़शिक़े ज़ार बन चुके थे, दीवाना वार चीख़ कर कहने लगे : मुझे ह़ज़रते बीबी आमिना رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا के घर वापस ले चलो और दोबारा इल्तिजा करो कि मुझे दीदार करा दें। बीबी आमिना رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا के घर वापस आए (अब की बार) जूं ही आ़मिर यमनी ने हु़ज़ूरे पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा तो देखते ही लपका और क़दमों में गिर गया फिर एक ज़ोरदार चीख़ मारी और उस की रूह़ उन नन्हे नन्हे क़दमों पर कु़रबान हो गई। (ने'मते कुब्रा, स. 52)

अमजद का दिल मुठ्ठी में ले कर सोते हो क्या अन्जान !
नन्हे क़दमों में सर को रख कर हो जाऊं कु़रबान

اَللّٰہ اَللّٰہ اَللّٰہ هُو، لَا اِلٰهَ اِلَّا هُو
اَللّٰہ اَللّٰہ اَللّٰہ هُو، لَا اِلٰهَ اِلَّا هُو

मौलिदुन्नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जिस मुबारक मकान में **अल्लाह** करीम के प्यारे प्यारे आख़िरी रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की विलादत (या'नी BIRTH) हुई, तारीखे़ इस्लाम में उस मक़ाम का नाम "**मौलिदुन्नबी** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم" (या'नी नबी की पैदाइश की जगह) है, येह बहुत ही मुतबर्रक (या'नी बा बरकत) मक़ाम है। अ़ल्लामा कु़त्बुद्दीन رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : हु़ज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की विलादत गाह पर दुआ़ क़बूल होती है। (بلد الامین، ص۲۰۱)

ख़लीफ़ा हारून रशीद رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ की अम्मीजान رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہَا ने यहां मस्जिद ता'मीर करवाई थी, इस मस्जिद को कई मरतबा ता'मीर किया गया, येह इन्तिहाई ख़ूब सूरत इ़मारत थी जिस के अक्सर हि़स्से पर सोने से काम किया गया था। (جامع الآثار، مطلب فی مکان مولد النبی، ۲/۷۵۱تا۷۵۲ ملتقطاً)

बा बरकत मक़ाम

अ़ल्लामा अबुल हुसैन मुह़म्मद बिन अह़मद जुबैर अन्दलुसी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस मकाने आ़लीशान का ज़िक्र करते हुए (अपने ज़माने के ह़िसाब से) लिखते हैं : वोह मुक़द्दस जगह जहां **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत (या'नी BIRTH) हुई, उस बा बरकत जगह पर चांदी चढ़ाई गई थी (येह जगह यूं लगती है) जैसे छोटा सा पानी का तालाब हो जिस की सत़ह़ चांदी की हो। येह मुबारक मकान रबीउ़ल अव्वल में पीर के दिन खोला जाता है क्यूं कि रबीउ़ल अव्वल हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत का महीना और पीर विलादत का दिन है, लोग इस मकान में बरकतें लेने के लिये दाख़िल होते हैं। मक्कए मुकर्रमा में येह दिन हमेशा से **''यौमे मश्हूद''** है या'नी इस दिन लोग जम्अ़ होते हैं। (تذکرۃ بالاخبار عن اتفاقات الاسفار، ص ۸۷-۱۲۷ ملتقطاً)

अल्लाह पाक की बारगाह में अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अ़र्ज़ करते हैं :

मक्के में उन की जाए विलादत पे या ख़ुदा फिर चश्मे अश्कबार जमाना नसीब हो

मकाने विलादत में ह़ाज़िरी की सआ़दत

आह आह आह ! अब येह सब मा'मूलाते मुबारका मौक़ूफ़ हो गए और आज कल इस मकाने अ़ज़मत निशान की जगह लायब्रेरी क़ाइम है और उस पर **''مَكْتَبَةُ مَكَّةِ الْمُكَرَّمَة''** का बोर्ड लगा हुवा है। इस मकाने अ़ज़मत निशान पर पहुंचने का आसान त़रीक़ा येह है कि आप कोहे मर्वह के किसी भी क़रीबी दरवाज़े से बाहर आ जाइये। सामने नमाज़ियों के लिये बहुत बड़ा इह़ात़ा बना हुवा है, इह़ात़े के उस पार येह मकाने आ़लीशान अपने जल्वे लुटा रहा है, اِنْ شَآءَ الله दूर ही से नज़र आ जाएगा।

(आ़शिक़ाने रसूल की 130 ह़िकायात, स. 238)

मीलादे मुस्त़फ़ा का बा क़ाइ़दा आग़ाज़ करने वाला बादशाह

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! सब से पहले मुरव्वजा त़रीक़े के साथ बा क़ाइ़दा जश्ने विलादत मनाने का आग़ाज़ अरबल के बादशाह अबू सईद मुज़फ़्फ़र رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने किया। आप की फ़रमाइश पर इब्ने दिह़या رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने मीलाद के मौज़ूअ़ पर किताब ''اَلتَّنْوِيْرُ بِمَوْلِدِ الْبَشِيْرِ وَالنَّذِيْرِ'' लिखी। इस पर अबू सईद मुज़फ़्फ़र رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने इब्ने दिह़या رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को एक हज़ार सोने के सिक्के बत़ौरे इन्आ़म अ़त़ा फ़रमाए।

(जवाहिरुल बिह़ार (उर्दू), 4/88)

سُبْحٰنَ اللّٰه ! कैसा पाकीज़ा दौर था और कैसे क़द्रदान आ़शिक़े रसूल थे कि मौलूद शरीफ़ की किताब लिखने पर इतना बड़ा इन्आ़म दिया। इस से येह भी पता चला कि पहले के बुज़ुर्ग अपने अन्दाज़ पर ख़ूब जश्ने विलादत मनाया करते थे।

मनाना जश्ने मीलादुन्नबी हरगिज़ न छोड़ेंगे जुलूसे पाक में जाना कभी हरगिज़ न छोड़ेंगे
लगाते जाएंगे हम या रसूलल्लाह के ना'रे मचाना मरह़बा की धूम भी हरगिज़ न छोड़ेंगे

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

मदीने में अ़ज़ीमुश्शान इज्तिमाए़ मीलाद

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ली बिन मूसा मदीनी मालिकी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मस्जिदे नबवी शरीफ़ में एक ज़माने तक बारह रबीउ़ल अव्वल के दिन अ़ज़ीमुश्शान इज्तिमाए़ मीलाद होता था, जिस में बड़े बड़े इमाम बयान फ़रमाते। 12 रबीउ़ल अव्वल की सुब्ह़ का सूरज निकलते ही मीलाद शरीफ़ की मह़फ़िल का आग़ाज़ हो जाता और मीलाद पढ़ने के लिये चार अइम्मा (या'नी चार इमाम) मुक़र्रर होते। मह़फ़िल शरीफ़ ह़रम शरीफ़ के सेह़न में होती। पहले एक इमाम साह़िब मीलाद

शरीफ़ की मख़्सूस कुरसी पर बैठ कर अह़ादीस पढ़ते फिर दूसरे इमाम हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत शरीफ़ पर बयान करते । फिर तीसरे इमाम हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रज़ाअ़त (या'नी दूध पीने का जो ज़माना था उस) पर बयान करते फिर चौथे इमाम सफ़रे हिजरत पर बयान करते । आख़िर में लोग शरबत पीते और बादाम का ह़ल्वा ले कर वापस लौटते ।

(رسائل فی تاریخ المدینة، ص۷۷ ملخصاً)

जब तलक येह चांद तारे झिलमिलाते जाएंगे तब तलक जश्ने विलादत हम मनाते जाएंगे

उन के आ़शिक़ नूर की शम्एं जलाते जाएंगे जब कि ह़ासिद दिल जलाते सट्पटाते जाएंगे

नूर ही नूर

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! हम भी जश्ने विलादत मनाते हैं, काश ! अच्छों के तुफ़ैल हमारी काविशें भी क़बूल हो जाएं । ह़ज़रत शाह वलिय्युल्लाह मुह़द्दिस देह्लवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में मीलाद शरीफ़ के दिन **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मकाने विलादत पर ह़ाज़िर था, सब लोग हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदो सलाम पढ़ रहे थे और आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत के वक़्त जो ईमान अफ़्रोज़ वाक़िआ़त हुए थे उन का ज़िक्रे ख़ैर कर रहे थे तो मैं ने उन अन्वार को देखा जो एक दम उस मह़फ़िल में ज़ाहिर हुए और मैं नहीं कह सकता कि येह अन्वार मैं ने अपनी ज़ाहिरी आंखों से देखे या रूह़ की आंखों से देखे **अल्लाह** ही बेहतर जानता है । जब मैं ने उन अन्वारो तजल्लियात में ग़ौर किया तो पता चला कि येह अन्वार उन फ़िरिश्तों की त़रफ़ से ज़ाहिर हो रहे हैं जो इस त़रह़ की नूरानी और बा बरकत मह़ाफ़िल में शरीक होते हैं और मैं ने येह भी देखा कि उन फ़िरिश्तों से ज़ाहिर होने वाले अन्वार **अल्लाह** पाक की रह़मत के अन्वार से मिल रहे हैं । (फ़ुयूज़ुल ह़रमैन, स. 26)

पूरी मह़फ़िले मीलाद खड़े हो कर सुनने वाला बूढ़ा

मीलाद शरीफ़ में ता'ज़ीम के लिये खड़ा होने को बिद्अ़त कहने वाले एक शख़्स का वाक़िआ़ पढ़िये और इ़ब्रत ह़ासिल कीजिये : **ह़ज़रते** सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ब्बास मालिकी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ ने फ़रमाया : मैं बैतुल मुक़द्दस में 12 रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ की रात मह़फ़िले मीलाद में शरीक था, मैं ने देखा एक बूढ़ा शख़्स शुरूअ़ से आख़िर तक इन्तिहाई अदबो एह़तिराम के साथ खड़ा हो कर मह़फ़िले मीलाद में शरीक था । जब किसी ने पूरी मह़फ़िल खड़े हो कर सुनने की वज्ह पूछी तो उस ने बताया कि मैं मुस्त़फ़ा करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़िक्रे ख़ैर सुनते वक़्त ता'ज़ीमन खड़े होने को ''बिद्अ़ते सय्यिआ'' (बुरी बिद्अ़त) जानता था। एक दिन मैं ने ख़्वाब में देखा कि मैं एक बहुत बड़े इज्तिमाअ़ में हूं और लोग मह़बूबे रब्बे जुल जलाल, रसूले बे मिसाल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इस्तिक़्बाल करने के लिये खड़े हैं, जब आमदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हुई तो तमाम लोगों ने इन्तिहाई अदबो एह़तिराम के साथ हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इस्तिक़्बाल किया, मगर मैं ता'ज़ीम के लिये खड़ा नहीं हुवा । नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''तू अब खड़ा नहीं हो सकेगा।'' जब आंख खुली तो देखा कि अब भी बैठा हुवा हूं। इसी परेशानी में एक साल गुज़र गया मगर मैं खड़ा न हो सका। बिल आख़िर मैं ने येह मन्नत मानी कि अगर **अल्लाह** पाक मुझे इस मरज़ से शिफ़ा दे दे तो मैं मह़फ़िले मीलाद शुरूअ़ से आख़िर तक खड़े हो कर सुना करूंगा। इस मन्नत की बरकत से **अल्लाह** करीम ने मुझे सिह़्ह़त अ़त़ा फ़रमाई। तो अब मेरा येह मा'मूल बन गया कि अपनी मन्नत को पूरा करते हुए सरकार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम में पूरी मह़फ़िल खड़े हो कर सुनता हूं। (الاعلام بفتاوی ائمۃ الاسلام، ص۹۴)

ख़ूब बरसेंगी जनाज़े पर ख़ुदा की रह़मतें क़ब्र तक सरकार की ना'तें सुनाते जाएंगे

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

ऐसी मन्नत मानें जिसे पूरा कर सकें

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! यहां जो मन्नत उन्हों ने मानी येह मन्नते शरई नहीं, मन्नते उ़र्फ़ी थी, मन्नते उ़र्फ़ी का पूरा करना वाजिब नहीं होता लेकिन इस त़रह़ की जो जाइज़ मन्नतें मानी जाती हैं उन्हें पूरा कर देना चाहिये कि इसी में भलाई है। مَاشَآءَاللّٰه उन्हों ने मन्नत मानी **अल्लाह** पाक ने उन्हें शिफ़ा दे दी और वोह मह़फ़िले मीलाद खड़े हो कर सुनते थे। ऐसा न हो कि जोश में आ कर आप सब भी इस त़रह़ की मन्नत मानने लग जाएं क्यूं कि सारी मह़फ़िल खड़े हो कर सुनना सब के बस में नहीं होता और अगर बड़ा इज्तिमाअ़ हो और उस के बीच में आप खड़े हो जाएं तो इस से पीछे वालों को परेशानी होगी और बिठाने के लिये खींचेंगे और यूं मसाइल पैदा होंगे।

ज़िक्रे मीलादे मुबारक कैसे छोड़ें हम भला   जिन का खाते हैं उन्हीं के गीत गाते जाएंगे

शैत़ानी लोग

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! सोश्यल मीडिया का ज़माना है बा'ज़ नादान लोग जो जश्ने विलादत नहीं मनाते त़रह़ त़रह़ के वस्वसे फैला कर आ़शिक़ाने रसूल को इस नेक और बरकतों वाले काम से रोकने के मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ इख़्तियार करते हैं। येह "**शयात़ीनुल इन्स**" या'नी "शैत़ान आदमी" गुमराह करने की कोशिश करते और दिलों में शुकूको शुबुहात डालते हैं। आइम्मए दीन फ़रमाया करते कि "**शैत़ान आदमी, शैत़ान जिन्न से सख़्त तर होता है।**"

(फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 780, 781)

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी, मुह़म्मदे मदनी صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** की पनाह मांग शैत़ान आदमियों और शैत़ान जिन्नों के शर से। अ़र्ज़ की : क्या आदमियों में भी शैत़ान हैं ? फ़रमाया : हां। (مُسندِ اِمام احمد، ج۸ص۱۳۰حدیث۲۱۶۰۲)

चुनान्चे जितने गुमराह व बद मज़हब हैं वोह सब के सब **शयातीनुल इन्स** (या'नी शैत़ान आदमियों) में दाख़िल हैं और इब्लीस के साथ साथ उन के शर से भी हमें पनाह मांगते रहना चाहिये, मगर अफ़्सोस ! बहुत से मुसल्मान उन से ख़ूब मेलजोल रखते हैं और उन की गुफ़्तगू भी ख़ूब तवज्जोह से सुनते हैं। उन के मज़्हबी प्रोग्रामों में भी शरीक होते हैं, उन का लिट्रेचर भी पढ़ते हैं, येही वज्ह है कि फिर अपने दीन से ना वाक़िफ़िय्यत की बिना पर शको शुब्हे में पड़ जाते हैं कि आया वोह सह़ीह़ हैं या हम ? और फिर बा'ज़ तो उन के जाल में इस क़दर फंस जाते हैं कि उन्हीं के गुन गाने लगते हैं और यहां तक कहते सुनाई देते हैं कि ''येह भी तो सह़ीह़ कह रहे हैं !''

हमदर्दाना मश्वरा !

इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम **अह़मद रज़ा ख़ान** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ऐसों से बचने की ताकीद करते हुए फ़रमाते हैं : **भाइयो !** तुम अपने नफ़्अ़ नुक़्सान को ज़ियादा जानते हो या तुम्हारा रब तुम्हारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, उन का हुक्म तो येह है कि शैत़ान तुम्हारे पास **वस्वसा** डालने आए तो सीधा जवाब येह दे दो कि ''तू झूटा है'' न येह कि तुम आप दौड़ दौड़ के उन (काफ़िरों या बे दीनों और बद मज़्हबों) के पास जाओ। लोग अपनी जहालत से गुमान करते हैं कि हम अपने दिल से मुसल्मान हैं हम पर उन का क्या असर होगा ! ह़ालां कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जो **दज्जाल** की ख़बर सुने उस पर वाजिब है कि उस से दूर भागे कि ख़ुदा की क़सम ! आदमी उस के पास जाएगा और येह ख़याल करेगा कि मैं तो मुसल्मान हूं या'नी मुझे उस से क्या नुक़्सान पहुंचेगा वहां उस के धोकों में पड़ कर उस का पैरव (या'नी पैरवी करने वाला) हो जाएगा। (ابوداؤد، ج۴ص۱۵۷حدیث۴۳۱۹) क्या दज्जाल एक उसी दज्जाल अख़्बस (या'नी नापाक तरीन दज्जाल) को समझते हो जो आने

वाला है, ह़ाशा ! तमाम गुमराहों के दाई़ मुनादी (या'नी दा'वत देने वाले बुलाने वाले) सब **दज्जाल** हैं और सब से दूर भागने ही का हुक्म फ़रमाया और उस में येही अन्देशा बताया है। (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 781, 782)

सरवरे दीं ! लीजे अपने ना तुवानों की ख़बर नफ़्सो शैत़ां सय्यिदा ! कब तक दबाते जाएंगे

मीलाद शरीफ़ मनाने से मन्अ़ करने वालों के वस्वसों के जवाबात

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बा'ज़ लोग जश्ने ईदे मीलादुन्नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तअ़ल्लुक़ से वस्वसों का शिकार रहते हैं उन को समझाने की कोशिश का सवाब कमाने और भोलेभाले आ़शिक़ाने रसूल को परेशानी (Confusion) से बचाने की अच्छी अच्छी निय्यतों से चन्द सुवाल जवाब पेश किये जाते हैं, अगर एक बार पढ़ने से तसल्ली न हो तो तीन बार पढ़ लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه बात दिल में उतर जाएगी, वस्वसे दूर होंगे और इत्मीनाने क़ल्ब नसीब होगा।

(1) सुवाल : क़ुरआन व ह़दीस में मीलाद शरीफ़ का ज़िक्र नहीं है लिहाज़ा मीलाद नहीं मनाना चाहिये।

जवाब : क़ुरआने करीम से तीन दलाइल पढ़िये ! **अल्लाह** पाक सूरए आले इमरान आयत नम्बर 164 में इर्शाद फ़रमाता है : (1) لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक **अल्लाह** का बड़ा एह़सान हुवा मुसल्मानों पर कि उन में उन्हीं में से एक रसूल भेजा। (2) सूरए यूनुस आयत नम्बर 58 : قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا ؕ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿۵۸﴾ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम फ़रमाओ **अल्लाह** ही के फ़ज़्ल और उसी की रह़मत और इसी पर चाहिये कि ख़ुशी करें वोह उन के सब धन दौलत से बेहतर है। (3) पारह 30 सूरतुद्दुह़ा आयत नम्बर 12 : وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ﴿۱۱﴾ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और अपने रब की ने'मत का ख़ूब चरचा करो।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस आयत से पता चला कि **अल्लाह** पाक के फ़ज़्ल पर ख़ुशी मनाना ख़ुद **अल्लाह** पाक का हुक्म है। **अल्लाह** पाक के रह़मत वाले नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुन्या में आमद तमाम ने'मतों से बढ़ कर है कि **अल्लाह** पाक ने इस पर एह़सान जताया है तो इस का चरचा करना इसी आयत पर अ़मल करना है, आज किसी के हां बच्चा पैदा हो तो वोह हर साल सालगिरह मनाता है, जिस तारीख़ को मुल्क आज़ाद हुवा हो हर साल उस तारीख़ को जश्न मनाया जाता और जुलूस निकाला जाता है और जो इस पर तन्क़ीद करे उसे मुल्क का ग़द्दार कहा जाता है तो जिस तारीख़ को दो जहां के सरदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दुन्या में तशरीफ़ लाएं वोह क्यूं न सब से बढ़ कर ख़ुशी का दिन होगा ? लिहाज़ा मीलाद शरीफ़ मनाना हुक्मे क़ुरआनी पर अ़मल करना है। क्या येह ए'तिराज़ करने वाला रसूले पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत **अल्लाह** पाक की ने'मत, फ़ज़्ले इलाही और रह़मते ख़ुदावन्दी नहीं मानता या मह़फ़िले मीलाद को इस ने'मते इलाही का चरचा और इस फ़ज़्लो रह़मत की ख़ुशी नहीं समझता या वोह येह बताए कि क़ुरआनो ह़दीस में कहीं मह़फ़िले मीलाद शरीफ़ मन्अ़ है ???

ख़ाक हो जाएं अ़दू जल कर मगर हम तो रज़ा दम में जब तक दम है ज़िक्र उन का सुनाते जाएंगे

(2) सुवाल : सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने कभी जश्ने विलादत नहीं मनाया तो क्या तुम उन से ज़ियादा आ़शिक़े रसूल हो ?

जवाब : क़ुरआने करीम के बा'द सब से ज़ियादा क़ाबिले ए'तिमाद किताब **''सह़ीह़ बुख़ारी''** है और इस को तक़रीबन सभी मुसल्मान मानते हैं, इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه हर ह़दीसे मुबारका लिखने से पहले ग़ुस्ल करते

और दो रक्अ़त नफ़्ल अदा फ़रमाते। (नुज़्हतुल क़ारी, 1/130, फ़रीद बुक स्टॉल) ह़ालां कि सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان में ऐसी कोई रिवायत नहीं मिलती कि वोह ह़दीसे पाक बयान करने से पहले ग़ुस्ल फ़रमाते और दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ते तो क्या येह कहा जाएगा कि इमाम बुख़ारी सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان से बड़े आ़शिक़े रसूल हैं ? या आप رَحۡمَةُ اللهِ عَلَيۡه के दिल में सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان से ज़ियादा ह़दीसे पाक का अदब है ? **मज़ीद सुनिये !** करोड़ों मालिकिय्यों के अ़ज़ीम पेशवा **ह़ज़रते** सय्यिदुना इमाम मालिक رَحۡمَةُ اللهِ عَلَيۡه **मदीनए पाक** की गलियों में नंगे पैर चला करते थे और ता'ज़ीमे ख़ाके मदीना की ख़ातिर मदीनए मुनव्वरह में कभी भी क़ज़ाए ह़ाजत नहीं की, इस के लिये हमेशा ह़रमे मदीना से बाहर तशरीफ़ ले जाते थे, अलबत्ता ह़ालते मरज़ में मजबूर थे। (बुस्तानुल मुह़द्दिसीन, स. 19) तो क्या अब येह कहा जाएगा कि इमाम मालिक رَحۡمَةُ اللهِ عَلَيۡه सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان से बड़े आ़शिक़े रसूल हैं ? हरगिज़ नहीं, क़ुरआने करीम में उसूल बयान फ़रमा दिया गया है और वोह येह है : وَتُعَزِّرُوۡهُ وَتُوَقِّرُوۡهُ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और रसूल की ता'ज़ीमो तौक़ीर करो" इस आयते मुबारका की तफ़्सीर में मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया है कि ता'ज़ीमे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का जो भी त़रीक़ा राइज हो और वोह शरीअ़त से न टकराता हो वोह इस आयत में दाख़िल है, यहां ता'ज़ीमो तौक़ीर के लिये किसी क़िस्म की कोई क़ैद बयान नहीं की गई, चाहे खड़े हो कर सलातो सलाम पढ़ना हो या कोई दूसरा त़रीक़ा सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हर वोह ता'ज़ीम जो ख़िलाफ़े शर्अ़ न हो, की जाएगी। (तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, 9/353) बे शुमार ऐसे काम किये जा

रहे हैं जो कि सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان और ताबिईन رَحۡمَةُ اللهِ عَلَيۡهِم के दौर में न थे मगर दीन में जारी हैं और जश्ने विलादत से मन्अ़ करने वाले लोग भी येह काम करते हैं जैसे मुरव्वजा दर्से निज़ामी का कोर्स, मुरव्वजा मद्रसों का निज़ाम, हिफ़्ज़ो नाज़िरा की अलग अलग क्लासिज़, तनख़्वाह दे कर पढ़ने के लिये उस्ताद मुक़र्रर करना और इस तनख़्वाह के लिये चन्दा मांगना, इफ़्तिताह़े बुख़ारी, ख़त्मे बुख़ारी बल्कि ख़ुद सह़ीह़ बुख़ारी, सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان व ताबिईन बल्कि तब्अ़ ताबिईन رَحۡمَةُ اللهِ عَلَيۡهِم के ज़माने के बहुत बा'द लिखी गई, हवाई जहाज़ के ज़रीए सफ़रे ह़ज्जो उ़म्रह वग़ैरा हज़ारों दीनी काम हैं जो किये जा रहे हैं, कोई इन से मन्अ़ नहीं करता। अपने अपने नसीब की बात है जिस को जिस से मह़ब्बत होती है वोह उस की ख़ूब याद मनाता और घरों को रोशन करता है और कोई ह़ीले बहाने बना कर दिल जलाता रहता है।

जूं ही आमद माहे मीलादे मुबारक की हुई अहले ईमां झूम उठे शैत़ां को ग़ुस्सा आया है
हर मलक है शादमां, ख़ुश आज हर इक हूर है हां ! मगर शैत़ान मअ़ रुफ़क़ा बड़ा रन्जूर है

(3) सुवाल : इस्लाम में सिर्फ़ दो ही ईदों का ज़िक्र है, लिहाज़ा ईदे मीलादुन्नबी صَلَّى اللهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नहीं मनाना चाहिये।

जवाब : सिह़ाह़ सित्ता (या'नी ह़दीसे पाक की मश्हूर छे कुतुब) में है **अल्लाह** पाक के रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जुमुआ़ **ईद का दिन** है।" इस ह़िसाब से तो पूरे साल में कमो बेश 48 ईदें हुईं और ईदुल फ़ित्र व ईदुल अज़्ह़ा मिला कर 50 और येह ईदें जिस ईद के सदक़े में मिलीं वोह "**12 रबीउ़ल अव्वल शरीफ़**" है। اَلۡحَمۡدُ لِلّٰه ! येह आ़शिक़ाने रसूल के लिये ईदों की भी ईद है क्यूं कि हुज़ूरे अन्वर

صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दुन्या में तशरीफ़ न लाते तो कोई ईद, ईद होती, न कोई शब, शबे बराअत। कौनो मकान की तमाम तर रौनक़ो शान **अल्लाह** पाक के आख़िरी रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़दमों की धूल का सदक़ा है। ह़दीस में है : (**अल्लाह** पाक फ़रमाता है) ऐ मेरे ह़बीब ! मैं ने दुन्या और दुन्या वालों को इस लिये पैदा किया कि जो इ़ज़्ज़तो मन्ज़िलत तुम्हारी मेरे यहां है मैं उन को इस की पहचान करवा दूं और **ऐ मेरे ह़बीब ! अगर तुम न होते तो मैं दुन्या को न पैदा करता।** (لمعات التنقیح، 9/220 - المواہب اللدنیۃ،ج۱، ص۴۴)

वोह जो न थे तो कुछ न था, वोह जो न हों तो कुछ न हो
जान हैं वोह जहान की, जान है तो जहान है

(4) सुवाल : 12 रबीउ़ल अव्वल विलादत शरीफ़ का दिन नहीं है, इस में इख़्तिलाफ़ है और येह फ़तावा रज़विय्या में भी है, लिहाज़ा 12 रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ को जश्ने मीलादुन्नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नहीं मनाना चाहिये।

जवाब : इस सुवाल का एक जवाब तो येह है कि फ़तावा रज़विय्या में मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : अश्हरो अक्सर व माख़ूज़ो मो'तबर बारहवीं है। (या'नी सब से ज़ियादा मश्हूर, क़ाबिले ए'तिबार और मक़्बूल बात 12 रबीउ़ल अव्वल ही है।) (फ़तावा रज़विय्या, 26/411) दूसरा जवाब येह है कि अगर आप 12 रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ को जश्ने विलादत नहीं मनाते तो कोई और तारीख़ मसलन दो, आठ या दस रबीउ़ल अव्वल के क़ौल ही को मान लीजिये और ख़ूब धूमधाम से आमिना के लाल, मह़बूबे रब्बे ज़ुल जलाल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का जश्ने विलादत मनाइये।

झूम कर सारे ख़ुशी से बार बार "मरह़बा या मुस्त़फ़ा" फ़रमाइये
"या रसूलल्लाह" कहिये ज़ोर से शक़ जिगर इब्लीस का फ़रमाइये

(5) सुवाल : 12 रबीउ़ल अव्वल का जुलूस निकालना बिद्अ़त है और हर बिद्अ़त गुमराही और जहन्नम में ले जाने वाली है, लिहाज़ा जुलूसे मीलाद निकालना और इस में जाना जाइज़ नहीं है।

जवाब : मेरे भोलेभाले प्यारे इस्लामी भाइयो ! "बिद्अ़त" का मत़लब है नया काम, जिस त़रह़ हर नया काम बुरा नहीं होता इसी त़रह़ हर बिद्अ़त बुरी नहीं होती, बल्कि जो नया काम क़ुरआनो सुन्नत के ख़िलाफ़ हो वोह बिद्अ़ते सय्यिआ या'नी बुरी बिद्अ़त है, और ह़दीसे पाक "كُلُّ بِدْعَةٍ ضَلَالَةٌ" से मुराद बुरी बिद्अ़त है, जो नया काम क़ुरआनो सुन्नत, आसारे सह़ाबा या इज्माए़ उम्मत के ख़िलाफ़ न हो वोह बुरा नहीं है। जैसे तरावीह़ की जमाअ़त जो तक़रीबन हर मस्जिद में क़ाइम की जाती है इस को तो ख़ुद ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने अच्छी बिद्अ़त फ़रमाया है। कई बिद्अ़तें मुस्तह़ब बल्कि वाजिब होती हैं।

आज से तक़रीबन पांच सो साल पहले लिखी जाने वाली किताब "**ऐ़नुल इ़ल्म**" में है : जिस चीज़ के शुरूअ़ से मन्अ़ न फ़रमाया गया हो और सह़ाबा व ताबिईन के ज़माने के बा'द लोगों में जारी हुई हो उस में मुवाफ़क़त कर के मुसल्मानों का दिल ख़ुश करना बेहतर है अगर्चे वोह चीज़ बिद्अ़त (या'नी वोह नया काम) ही हो, इस पर दलील वोह ह़दीस है जो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इर्शाद और ख़ुद उन के क़ौल से मरवी हुई कि मुसल्मान जिस चीज़ को अच्छा समझें वोह ख़ुदा के नज़्दीक भी नेक है।

(عین العلم، ص۳۱۲)

तक़्रीबन साढ़े चार सो साल पुराने बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा इब्ने ह़जर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : बिद्अ़ते ह़सना (या'नी वोह नेक काम जो क़ुरआनो सुन्नत के ख़िलाफ़ न हो) के मुस्तह़ब होने पर इत्तिफ़ाक़ है और मौलूद शरीफ़ मनाना और इस के लिये लोगों का जम्अ़ होना इसी क़िस्म से है। (या'नी मीलाद शरीफ़ मनाना मुस्तह़ब, नेक और अच्छा काम है।) (انسان العیون، المکتبۃ الاسلامیہ بیروت ۱/۸۴)

ह़ज़रत मौलाना अ़ली शामी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस का इन्कार वोही करेगा जिस के दिल पर ख़ुदा ने मोह़र कर दी।

(फ़तावा रज़विय्या, 26/519, रज़ा फ़ाउन्डेशन)

लाख शैत़ां हम को रोके फ़ज़्ले रब से ता अबद जश्न, आक़ा की विलादत का मनाते जाएंगे

(6) सुवाल : पुराने बुज़ुर्गों ने मीलाद शरीफ़ मनाने के बारे में कुछ नहीं फ़रमाया लिहाज़ा मीलाद शरीफ़ नहीं मनाना चाहिये।

जवाब : कम अज़् कम पांच सो साल पहले के चन्द बुज़ुर्गों के फ़रामीन और उन की किताबों के बारे में पढ़िये : आज से तक़्रीबन साढ़े आठ सो साल पहले ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने जौज़ी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने एक किताब बनाम "**मौलिदुल उ़रूस**" लिखी जिस की रिवायत सफ़ह़ा नम्बर 10 पर गुज़री, फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मदे मुज्तबा, मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का जश्ने विलादत मनाने वाले को बरकत, इ़ज़्ज़त, भलाई और फ़ख़्र मिलेगा, मोतियों का इमामा और सब्ज़ ह़ुल्ला (या'नी Green Robe) पहन कर वोह दाख़िले जन्नत होगा। (مولد العروس، ص۲۸۱)

923 हिजरी (या'नी तक़्रीबन पांच सो साल पहले) के अ़ज़ीम बुज़ुर्ग इमाम अह़मद बिन मुह़म्मद क़स्त़लानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं :

सरवरे दो जहां صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत के महीने में मुसल्मान हमेशा से महफ़िले मीलाद करते आए हैं और विलादत की ख़ुशी में दा'वतें देते, खाने पकवाते और ख़ूब सदक़ा व ख़ैरात देते आए हैं। ख़ूब ख़ुशी का इज़्हार करते और दिल खोल कर ख़र्च करते, नीज़ आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादते बा सआ़दत के ज़िक्र का एहतिमाम करते आए हैं चुनान्चे उन पर **अल्लाह** पाक के बहुत बड़े फ़ज़्ल और बरकतों का नुज़ूल होता है मीलाद शरीफ़ मनाने से दिली मुरादें पूरी होती हैं **अल्लाह** पाक उस पर रह़मतें नाज़िल फ़रमाए जिस ने विलादत शरीफ़ की रातों को ईद (या'नी ख़ुशी का दिन) बना लिया। (मज़ीद फ़रमाते हैं :) मीलाद शरीफ़ की ख़ुशी उस के लिये सख़्त मुसीबतें हैं जिस के दिल में बीमारी और इ़नाद है। (زرقانی علی المواہب، 1/139، بیروت)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू शाम्मा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه (जो कि इमाम नववी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के उस्ताज़ हैं) फ़रमाते हैं : हमारे ज़माने में जो नया काम किया जाता है वोह येह है कि लोग हर साल **अल्लाह** पाक के रह़मत वाले नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मीलाद के दिन सदक़ातो ख़ैरात और ख़ुशी का इज़्हार करने के लिये अपने घरों और गलियों को सजाते हैं क्यूं कि इस में कई फ़ाएदे हैं सब से बड़ी बात येह है कि **अल्लाह** पाक ने अपने मह़बूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पैदा फ़रमा कर और रह़मतुल्लिल आ़लमीन बना कर भेजा है येह उस का अपने बन्दों पर बहुत बड़ा एह़सान है जिस का शुक्र अदा करने के लिये ख़ुशी का इज़्हार किया जाता है। (السیرۃ الحلبیہ، 1/80)

जो कि जलते हैं ज़िक्रे मौलिद से कर अ़त़ा उन को तू सक़र या रब

(7) सुवाल : 12 रबीउ़ल अव्वल को बहुत ज़ियादा लाइटिंग कर के

इसराफ़ किया जाता है अगर येह रक़म ग़रीबों में बांट दी जाए तो कितनों का भला हो जाएगा।

जवाब : सब से पहले तो येह क़ाइदा ज़ेह्न में बिठा लीजिये कि उ़लमाए किराम फ़रमाते हैं : لَاخَيْرَفِى الْاِسْرَافِ وَلَااِسْرَافَ فِى الْخَيْرِ या'नी इसराफ़ में कोई भलाई नहीं और भलाई के कामों में ख़र्च करने में कोई इसराफ़ नहीं। अ़ज़ीम ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुजाहिद رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : अगर कोई शख़्स उ़हुद पहाड़ के बराबर भी माल इ़ताअ़ते इलाही में ख़र्च करे तब भी वोह इसराफ़ करने वालों में से न होगा।

(حلیۃ الاولیاء،3/333دار الکتب العلمیہ بیروت)

ऊपर बयान कर्दा रिवायात से जब येह बात साबित हो गई कि जश्ने विलादत मनाना नेकी और सवाब का काम है तो सवाब के काम में माल जितना ज़ियादा ख़र्च किया जाए वोह कम ही है न कि इसराफ़। एक ख़बर के मुत़ाबिक़ हर साल 20 से 25 मिलियन रियाल से ग़िलाफ़े का'बा तय्यार किया जाता है, शादियों और नित नए फ़ंक्शन्ज़ पर करोड़ों के अख़राजात किये जाते हैं कोई इन को जा कर समझाए कि यहां ख़र्च करने की बजाए ग़रीबों में रक़म बांट दो तो पता चले ! बल्कि ख़ुद अपने ही घर के डेकोरेशन और एक से एक नए मॉडल की गाड़ियां, मोबाइल्ज़ वग़ैरा को देख लीजिये ज़रा इन को ग़रीबों में बांट कर चन्द हज़ार वाली बाईक और मोबाइल फ़ोन इस्ति'माल कर के ग़रीबों का भला कीजिये तो पता चले ! अल ग़रज़ बीसियों काम ऐसे किये जा रहे हैं जिन में करोड़ों, अरबों रुपै हर साल ख़र्च होते हैं मगर इस से कोई मन्अ़ नहीं करता, गुज़श्ता कुछ अ़र्से में कोरोना वायरल की वज्ह से होने वाले लॉक डाउन में सोश्यल मीडिया पर एक पोस्ट वायरल हुई कि **"देखो ! ग़रीबों में**

राशन वोही बांट रहे हैं जो जश्ने विलादत पर लाइटिंग करते हैं'' तो ख़ैर ग़रीबों की मदद भी कीजिये और जश्ने विलादत भी मनाइये, आख़िर सिर्फ़ जश्ने विलादत के मौक़अ़ पर ही येह वस्वसा ज़ेह्न में क्यूं आता है बात कुछ और तो नहीं ? नफ़्से अम्मारा और शैत़ान को लाह़ौल शरीफ़ पढ़ कर, मरह़बा या मुस्त़फ़ा का ना'रा लगा कर भगाइये और ख़ूब धूमधाम से जश्ने विलादत मनाइये ।

लहराओ सब्ज़ परचम ऐ आक़ा के आ़शिक़ो ! घर घर करो चराग़ां कि सरकार आ गए

चराग़ां की बरकत से ईमान नसीब हो गया

जश्ने विलादत के चराग़ां (लाइटिंग) की तो क्या बात है । एक इस्लामी भाई ने बताया कि एक बार जश्ने विलादत के मौक़अ़ पर मस्जिद को सजा कर दुल्हन बनाया हुवा था, एक ग़ैर मुस्लिम क़रीब से गुज़रा उस ने सजावट के बारे में मा'लूमात की । जब उसे बताया गया कि हम ने अपने प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत की ख़ुशी में येह अ़ज़ीमुश्शान चराग़ां किया है, तो उस का दिल नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़ज़मत से लबरेज़ हो गया कि आज विलादत को 1500 साल गुज़र गए इस के बा वुजूद मुसल्मान अपने नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इस क़दर शानो शौकत से जश्ने विलादत मनाते और अपनी मस्जिदों और घरों को यूं सजाते हैं !!! तो बस येही दीन सच्चा है । اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! उस ने कुफ़्र से तौबा की, कलिमा पढ़ा और मुसल्मान हो गया ।

आमदे सरकार से ज़ुल्मत हुई काफ़ूर है क्या ज़मीं क्या आस्मां हर सम्त छाया नूर है

ह़दीस शरीफ़ में है, सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस शख़्स ने इस्लाम में नेक त़रीक़ा निकाला उस को त़रीक़ा

निकालने का भी सवाब मिलेगा और उस पर अ़मल करने वालों का भी सवाब मिलेगा और अ़मल करने वालों के अपने सवाब में कुछ कमी न की जाएगी और जिस ने इस्लाम में बुरा त़रीक़ा निकाला तो उस पर वोह त़रीक़ा निकालने का भी गुनाह होगा और उस त़रीक़े पर अ़मल करने वालों का भी गुनाह होगा और उन अ़मल करने वालों के अपने गुनाह में कुछ कमी न की जाएगी ।" (مسلم، کتاب الزکاۃ، ص۵۰۸، الحدیث: ۶۹(۱۰۱۷))

(8) सुवाल : 12 रबीउ़ल अव्वल की लाइटिंग में बिजली की चोरी और बहुत ऊंची आवाज़ से ना'तें चला कर दूसरों को तक्लीफ़ पहुंचाई जाती है नीज़ लंगर इस त़रह़ लुटाया जाता है जिस से रिज़्क़ की बे हुर्मती होती है, लिहाज़ा जश्ने ईदे मीलादुन्नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नहीं मनाना चाहिये ।

जवाब : एक उसूल ज़ेह्न में बिठा लीजिये कि नाक पर मख्खी बैठे तो मख्खी को हटाते हैं न कि नाक ही को काट देते हैं । लिहाज़ा जश्ने विलादत मनाने में अगर कहीं कोई ख़िलाफ़े शर्अ़ काम होता हो तो ह़त्तल मक़्दूर उस बुरे काम को रोकने की कोशिश की जाएगी न कि जश्ने विलादत ही को रोक दिया जाए । येह बताइये ! ऐ़न शरीअ़त के मुत़ाबिक़ शादी कहां हो रही है ? तो क्या किसी ने येह कहा कि शादी करना छोड़ दो कि इस की वज्ह से बहुत सारे गुनाह करने पड़ते हैं । जश्ने आज़ादी के दिन कितने गुनाह होते हैं मगर इस से किसी ने मन्अ़ नहीं किया कि जश्ने आज़ादी न मनाओ, फिर आख़िर जश्ने ईदे मीलादुन्नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से क्यूं परेशानी होती है ? कहीं मस्अला कुछ और तो नहीं ???

मनाएंगे ख़ुशी हम ह़श्र तक जश्ने विलादत की सजावट और करना रोशनी हरगिज़ न छोड़ेंगे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सारा साल
अम्नो अमान रहता है

हज़रते सय्यिदुना इमाम क़स्त़लानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

फ़रमाते हैं : विलादते बा सआदत के अय्याम में महफ़िले मीलाद करने के ख़वास से येह अम्र मुजर्रब (या'नी तजरिबा शुदा) है कि इस साल अम्नो अमान रहता है और हर मुराद पाने में जल्दी आने वाली ख़ुश ख़बरी होती है। **अल्लाह** पाक उस शख़्स पर रहमत नाज़िल फ़रमाए जिस ने माहे विलादत की रातों को ईद बना लिया।

(مواہب لدنیہ، ج۱، ص۱۴۸)

M.R.P. ₹ 00/-

Maktabatul Madina

Mohammad Ali Road, Mandvi Post Office, Mumbai 9022177997, 9320558372
Faizane Madina, Teen Koniya Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad 9327168200
421, Urdu Market, Matia Mahal, Near: Noor Guest House, Jama Masjid, Delhi
011-23284560, 8178862570 For Home Delivery: 9978626025 T&C Apply
feedbackmmhind@gmail.com www.dawateislamihind.net